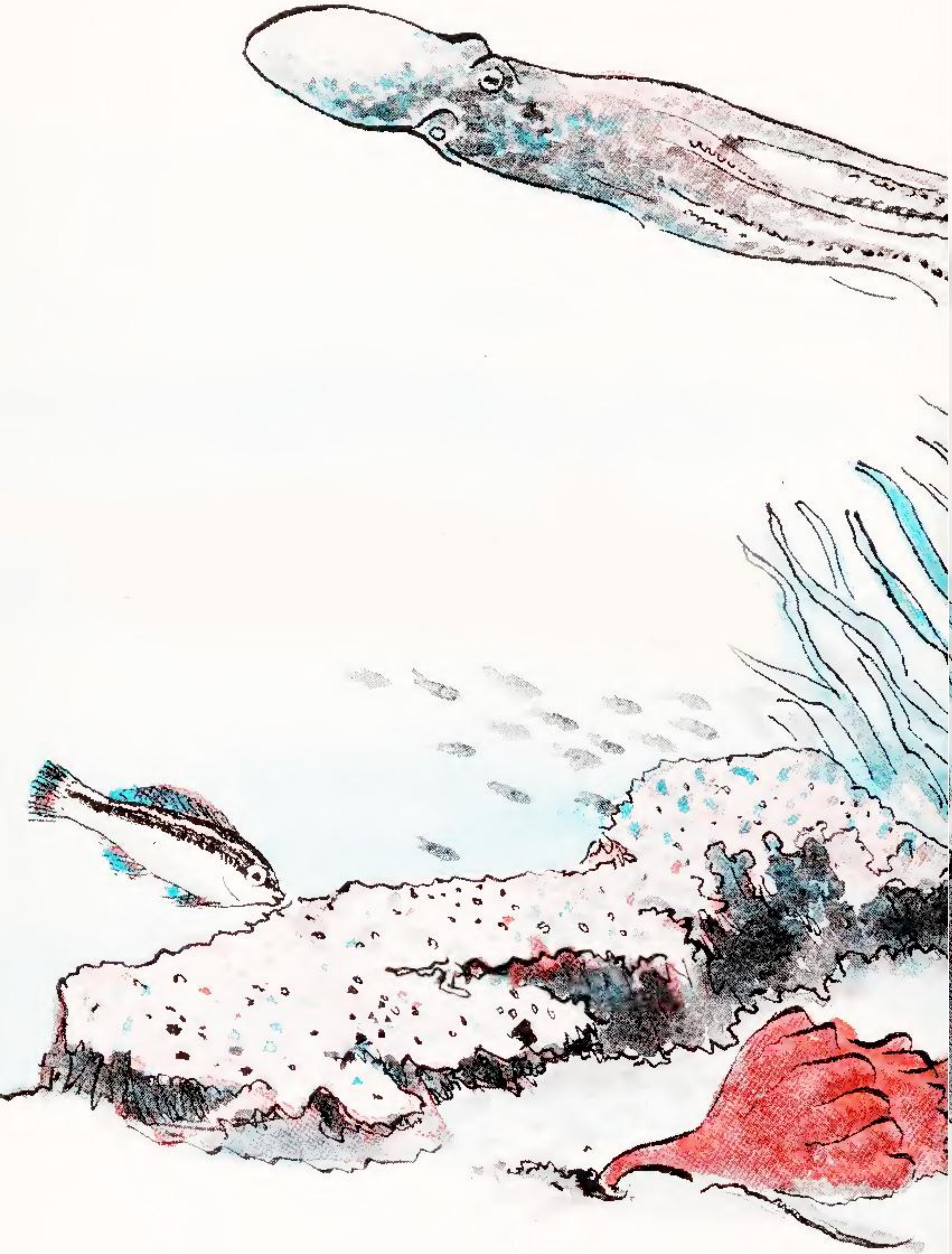
ऑक्टोपस

एवलिन शॉ

चित्र: राल्फ कार्पेन्टियर





ऑक्टोपस

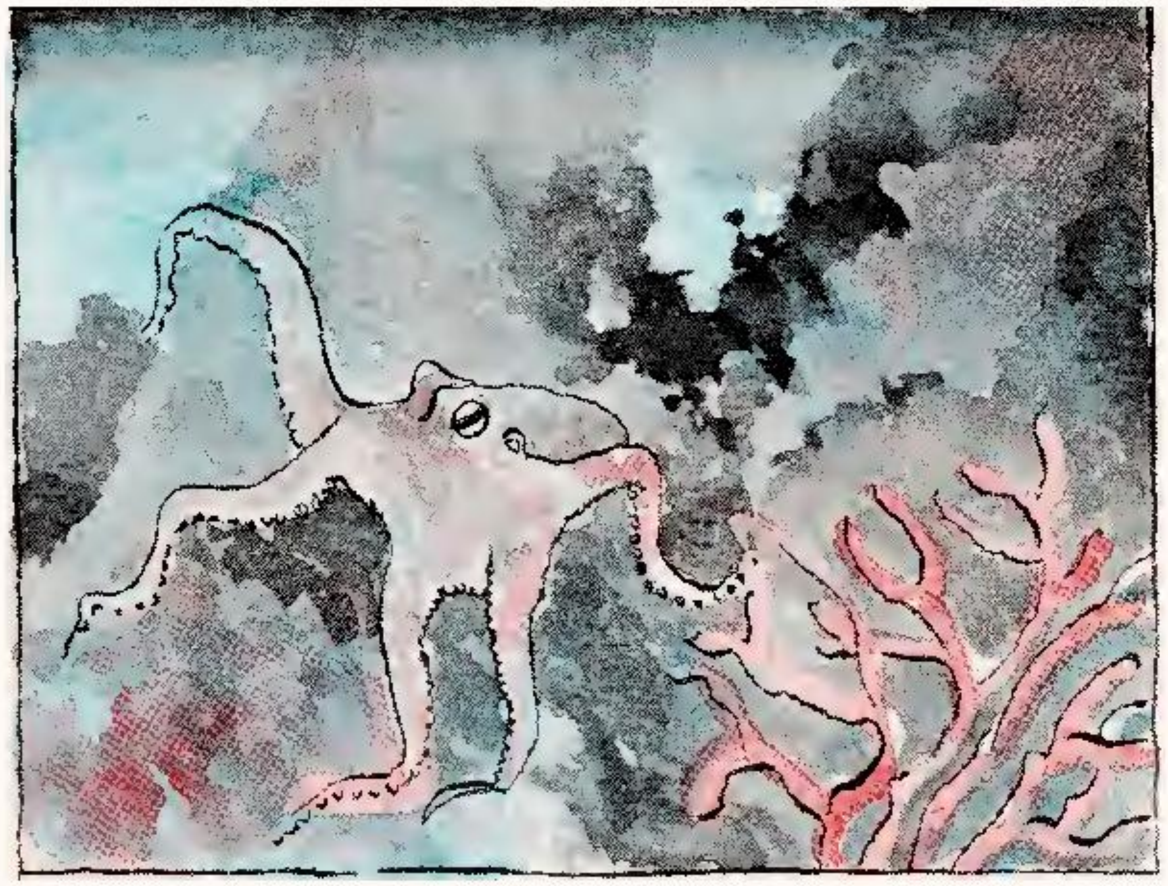
एवलिन शॉ

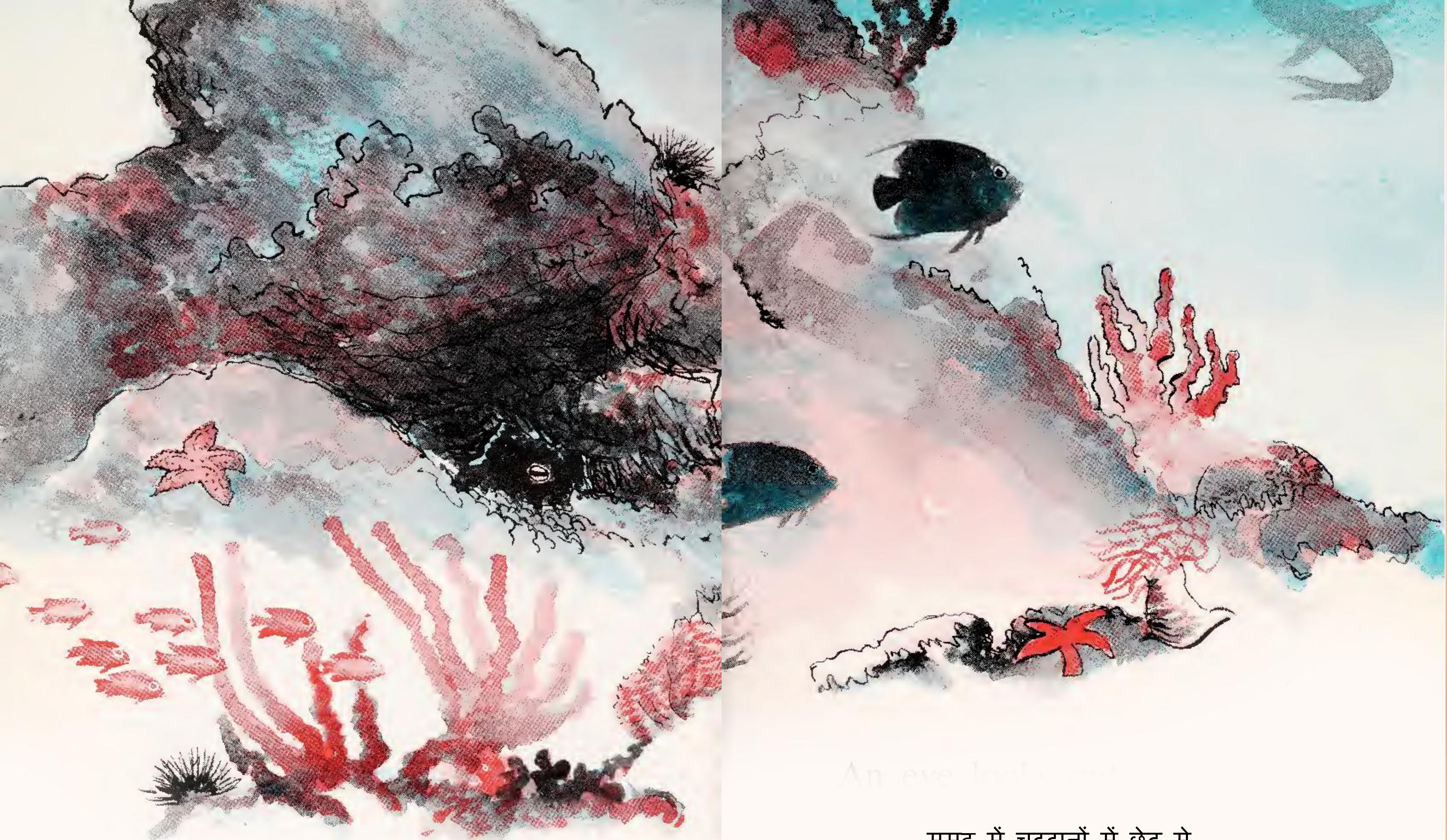
चित्र: राल्फ कार्पेन्टियर





ऑक्टोपस





समुद्र में चट्टानों में छेद से
एक आँख बाहर झाँक रही है.
वो आँख छोटी मछलियों को
तैरते हुए देख रही है.

वो आँख एक मादा ऑक्टोपस की है.
ऑक्टोपस का शरीर मोटा
और गुब्बारे जैसा गोल है.
उसकी आठ लंबी भुजाएँ हैं.
वे उसके शरीर के चारों
ओर लिपटी हुई हैं.
ऑक्टोपस भोजन की तलाश में
अपने घर से निकलने को तैयार है.





तभी एक दुर्घटना होती है.

एक छोटी नाव, चट्टानों से टकराती है.

नाव पीछे हटकर

फिर आगे बढ़ जाती है.

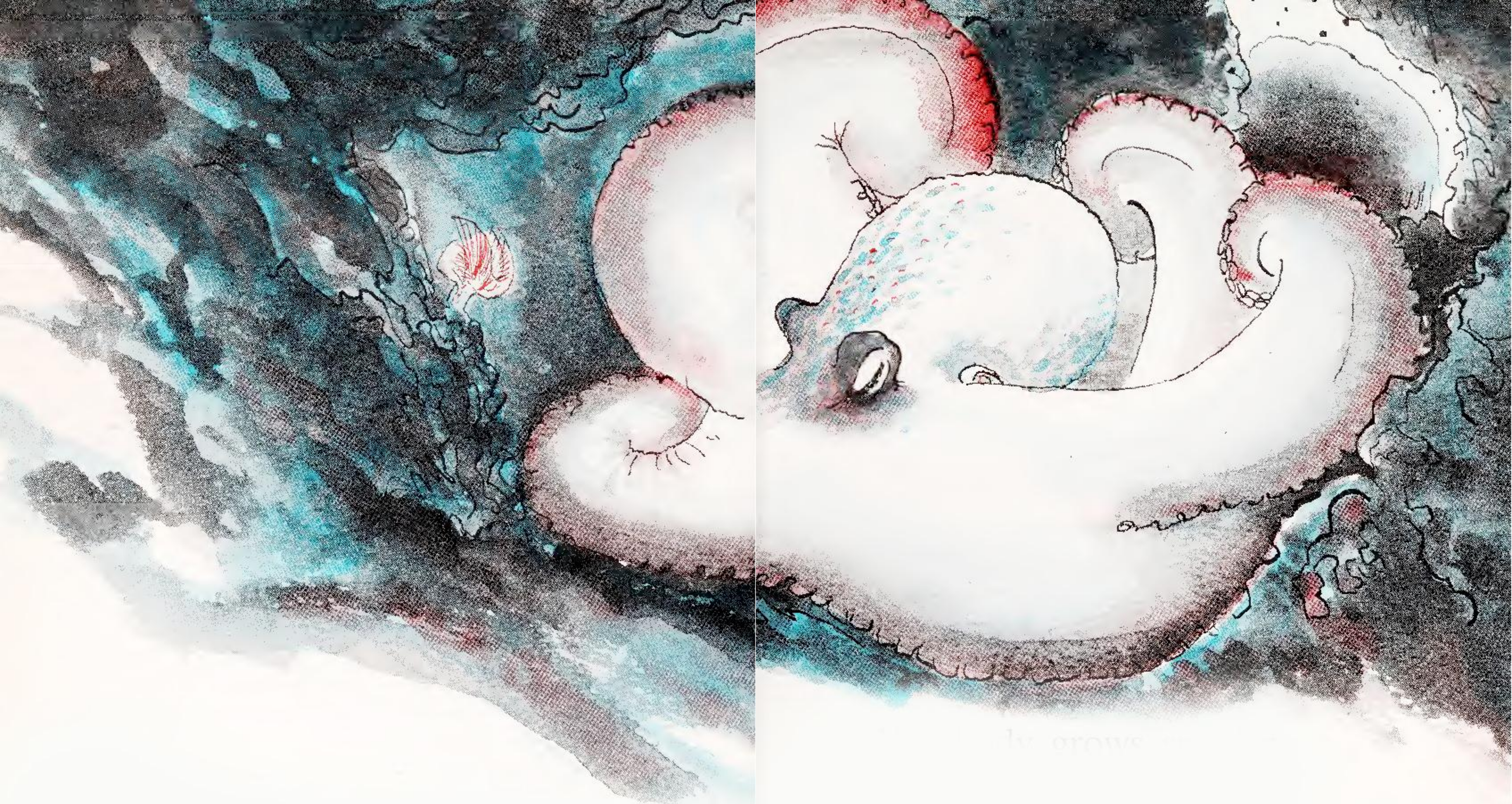
उससे एक चट्टान

समुद्र की तलहटी में गिर जाती हैं.

छोटी मछलियाँ पानी में बेतहाशा तैरती हैं.

एक केकड़ा नरम रेत को खोदता है.





ऑक्टोपस डर से पीली पड़ जाती है.

वह हाँफती है और हाँफती है.

उसका शरीर छोटा होता है,

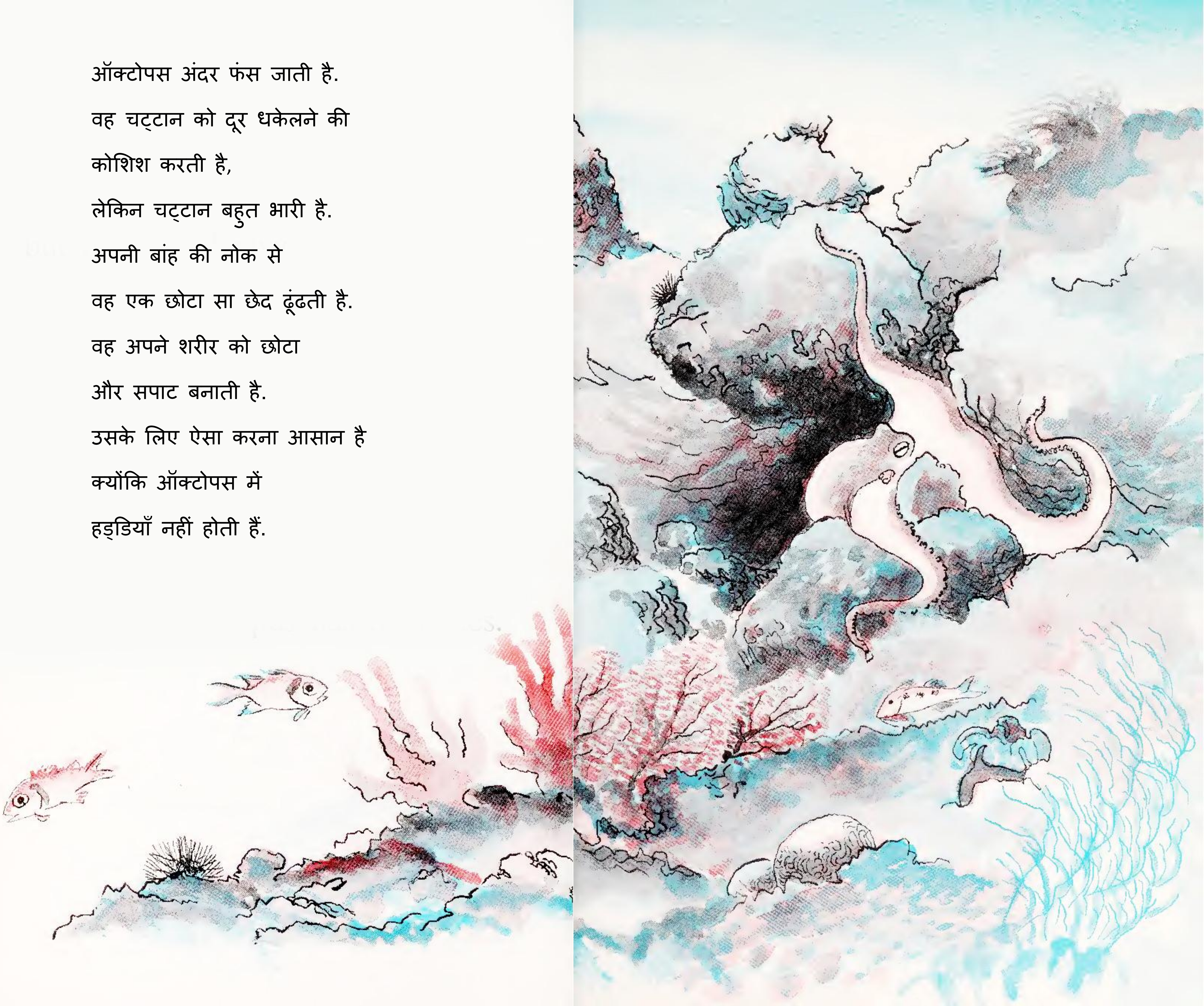
फिर बड़ा होता है,

और फिर छोटा होता है.

अचानक उसके घर के सामने

एक बड़ी सी चट्टान गिरती है.

ऑक्टोपस अंदर फंस जाती है.
वह चट्टान को दूर धकेलने की
कोशिश करती है,
लेकिन चट्टान बहुत भारी है.
अपनी बांह की नोक से
वह एक छोटा सा छेद ढूंढती है.
वह अपने शरीर को छोटा
और सपाट बनाती है.
उसके लिए ऐसा करना आसान है
क्योंकि ऑक्टोपस में
हड्डियाँ नहीं होती हैं.



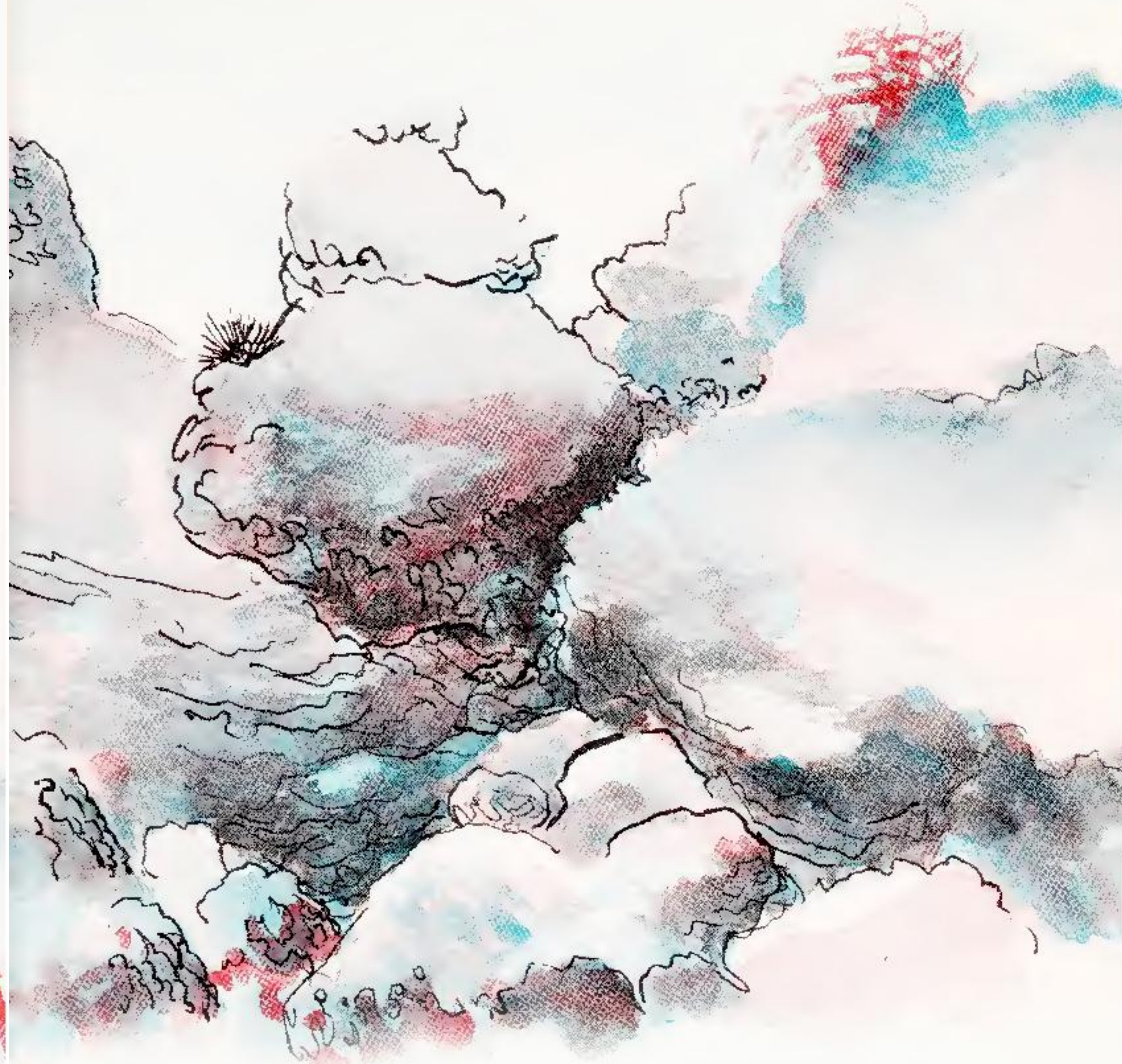
जब वह बाहर निकलती है,

तब उसका शरीर फिर से गोल हो जाता है.

ऑक्टोपस अपनी आठ भुजाओं पर

खड़ी हो जाती है और दूर चली जाती है.





उसी समय एक और बड़ी चट्टान गिरती है.

अब ऑक्टोपस कभी भी

अपने घर में नहीं घुस पाएगी.

ऑक्टोपस खतरे में है.

उसे एक नया घर चाहिए.

उसे एक ऐसी जगह चाहिए

जहाँ वह छिप सके,

आराम कर सके और खा सके.

फिर वह एक घर की तलाश शुरू करती है.

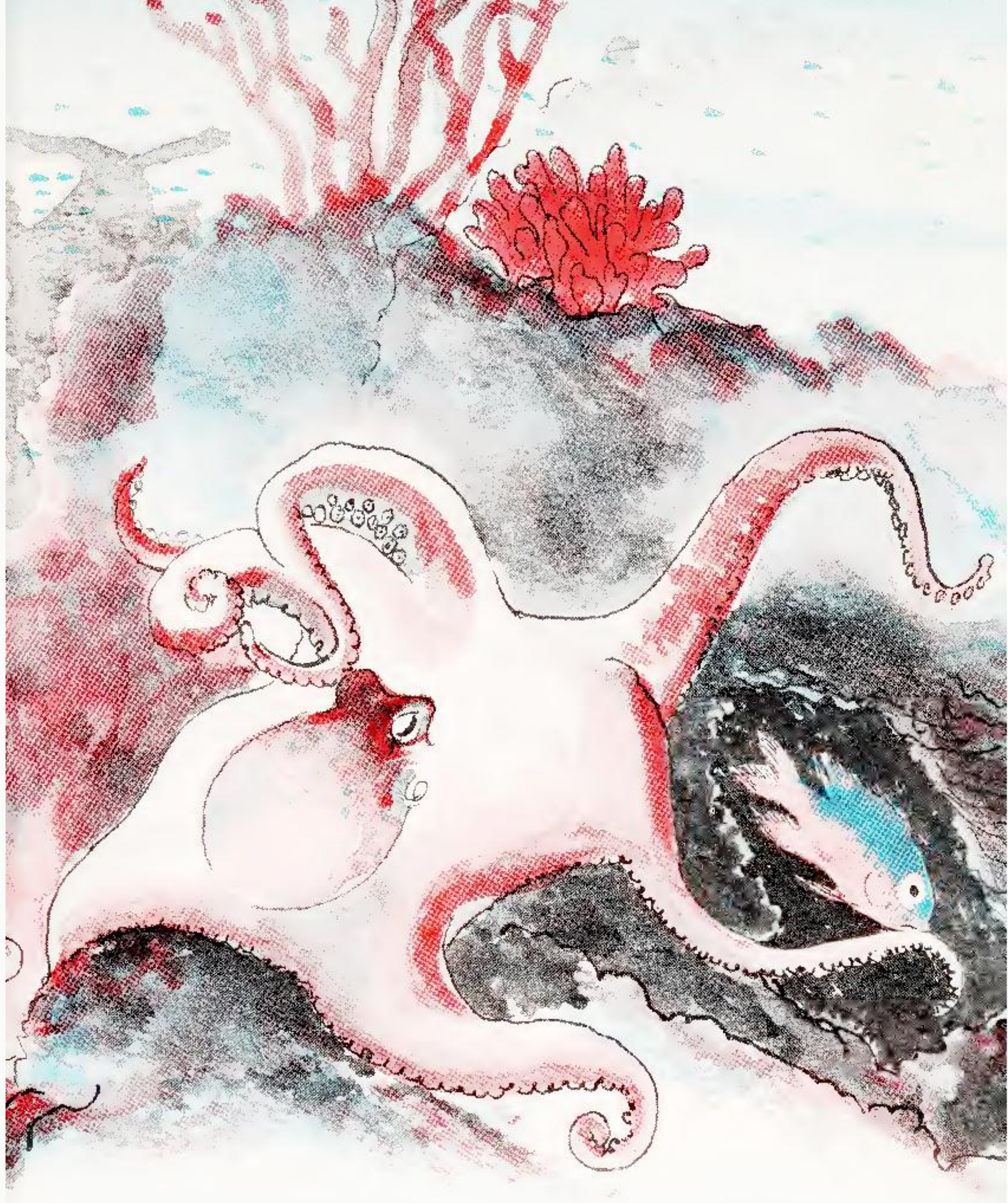
ऑक्टोपस कुछ चट्टानों पर फिसलती है.

फिर उसे एक छेद मिलता है.

वह एक हाथ की नोक को छेद में डालती है

यह देखने के लिए कि क्या वो खाली है.

लेकिन वो एक छोटी मछली का घर है.



मछली तैर कर बाहर आती है

और ऑक्टोपस को काटती है.



ऑक्टोपस आगे बढ़ती है.

अगला छेद जो उसे मिलता है

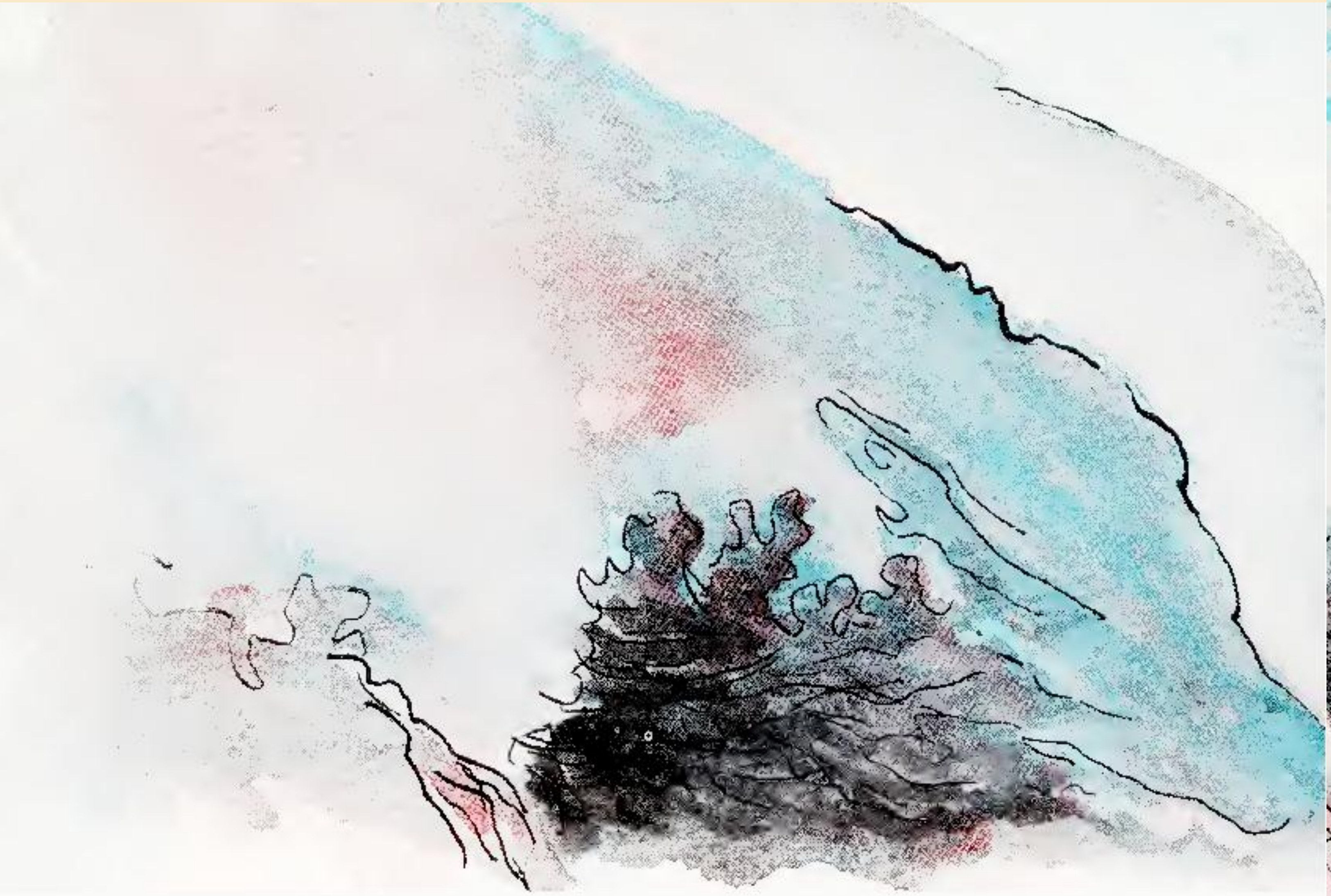
वह एक अन्य ऑक्टोपस का है.



वह अपने घर की रक्षा के लिए

बाहर आता है.

फिर वे आपस में लड़ने लगते हैं.



वे एक दूसरे के चारों ओर

अपनी-अपनी बाहें लपेटते हैं.

उनका रंग हल्के से

गहरे रंग में बदलता है

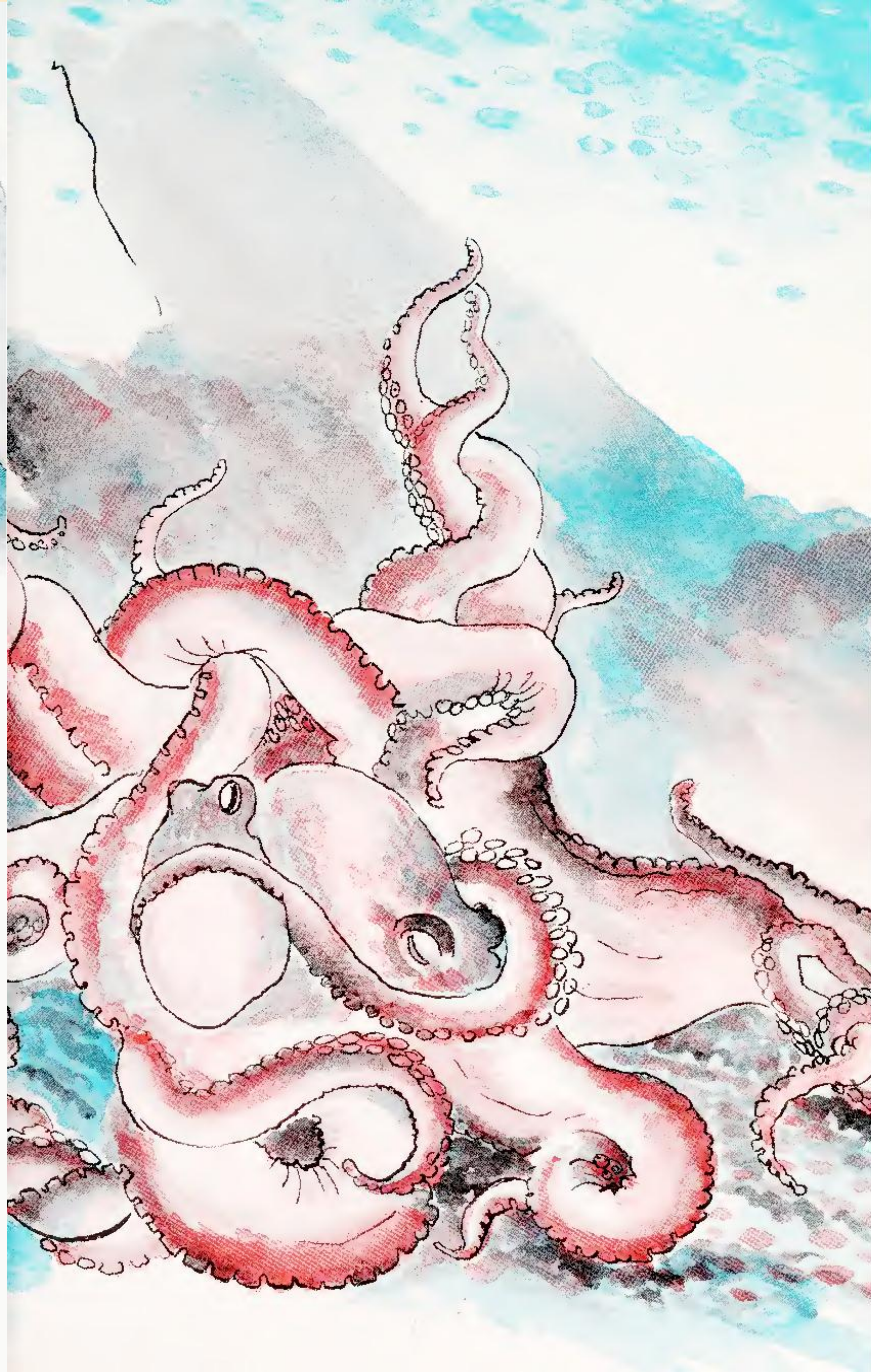
और फिर वापस हल्के रंग में.

वे चट्टानों पर फिसलते हैं.

अंत में ऑक्टोपस दूर हट जाती है.

और दूसरा ऑक्टोपस अपने घर में

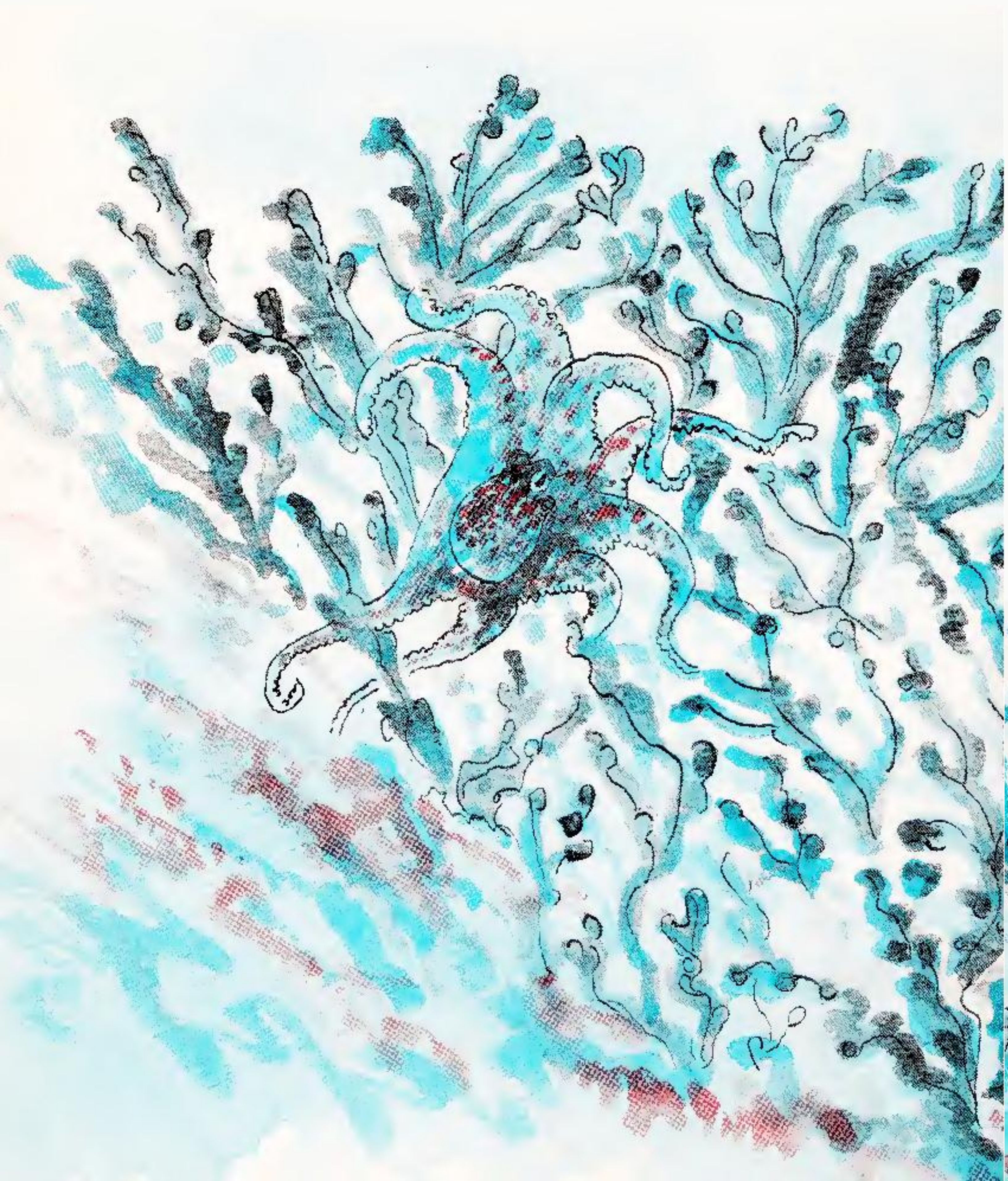
वापस चला जाता है.



उसे चोट नहीं लगी है,

लेकिन उसे रहने के लिए

अभी भी जगह नहीं मिली है.



ऑक्टोपस अपनी आठ भुजाओं पर चलकर

समुद्री शैवाल के बिस्तर पर पहुँचती है.

वह वहाँ आराम करने के लिए रुकती है.

उसका शरीर भूरा हो जाता है.

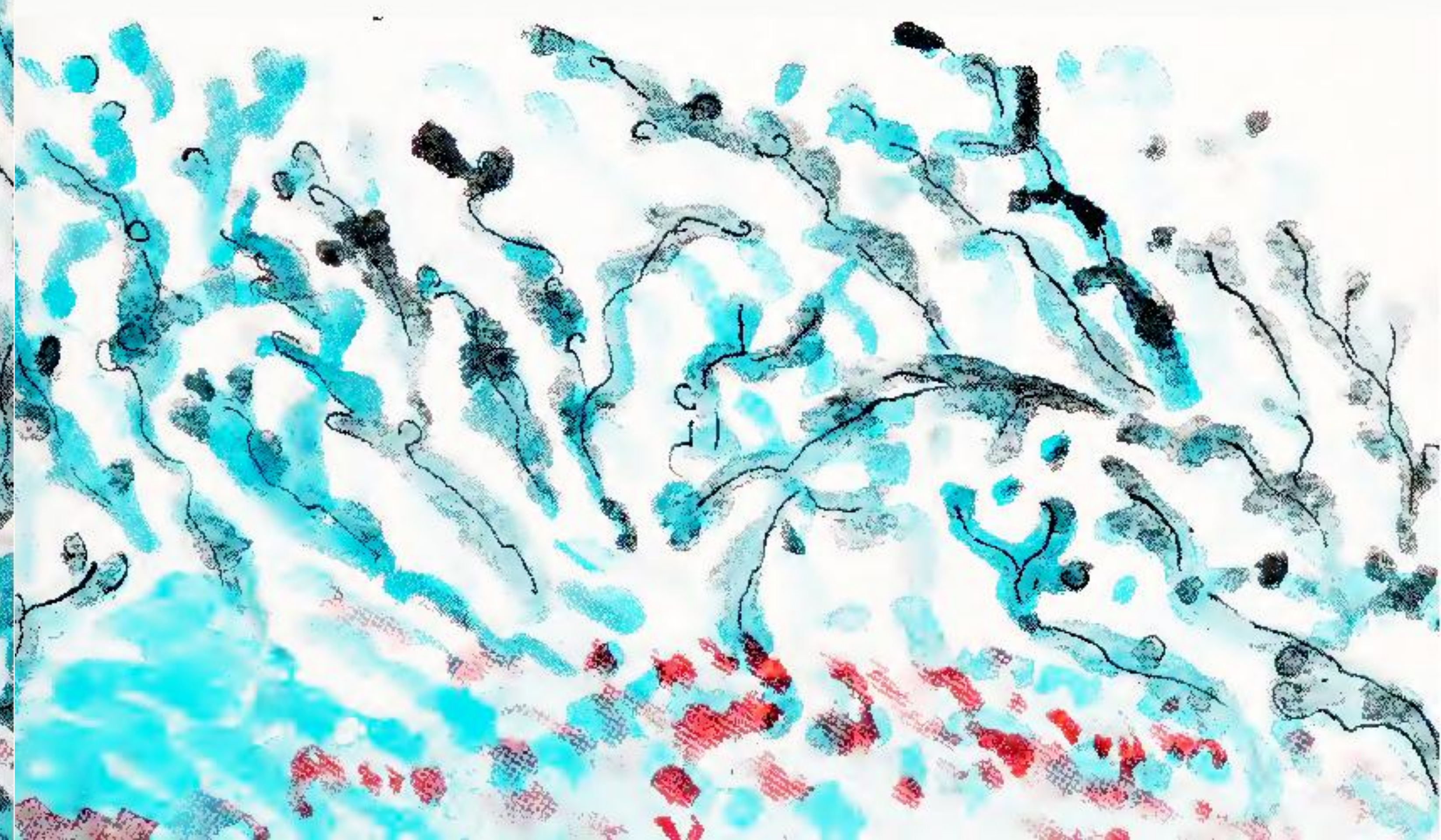
उसकी त्वचा

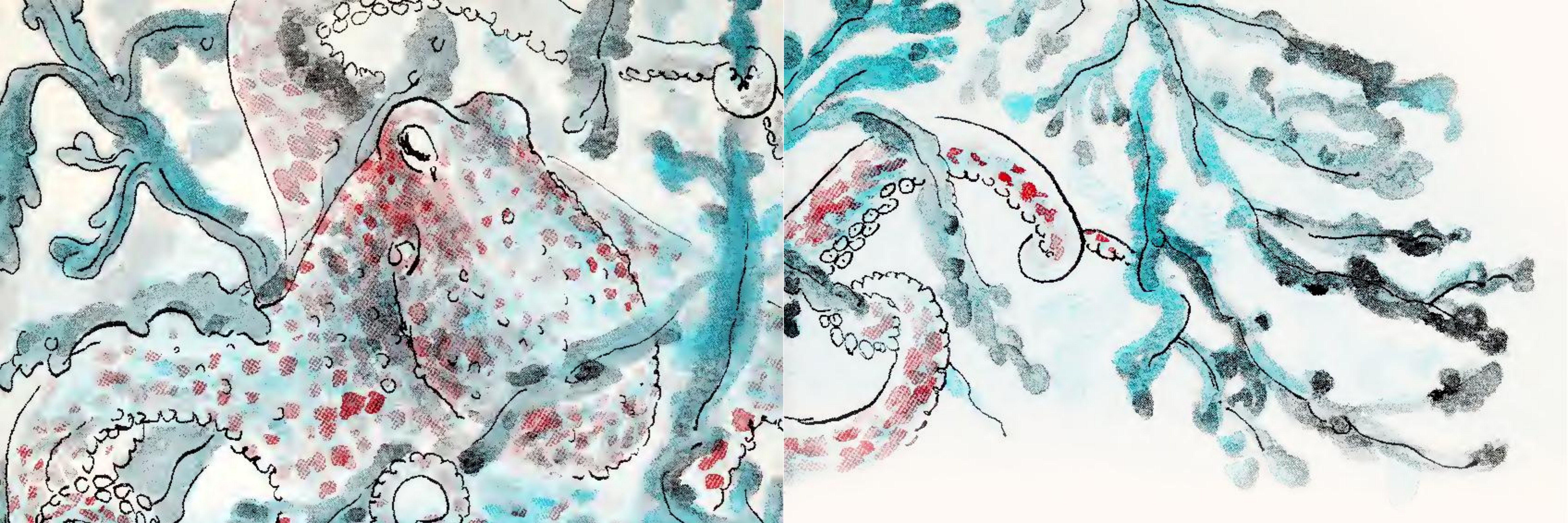
खुरदरी और ऊबड़-खाबड़ हो जाती है.

इससे अन्य जानवरों के लिए

उसे देखना मुश्किल हो जाता है.

अब वो बिल्कुल समुद्री शैवाल की तरह दिखती है.





समुद्र में अन्य पौधे भी हैं,

लेकिन ऑक्टोपस उन सभी की तरह

नहीं दिख सकती.

उसकी त्वचा में केवल कुछ ही रंग हैं.

वह नारंगी-लाल या भूरी हो सकती है.

वो गहरे या हल्के रंग की हो सकती है.

बाद में ऑक्टोपस समुद्री शैवाल
के बिस्तर को छोड़ देती है.
वह अपनी बाहों पर लगे चूसक से
हर चीज़ को छूती है.
वह इन चूसकों से महसूस करती है
और स्वाद चखती है.
ऑक्टोपस को एक छोटा खोल मिलता है.
वह अपनी मजबूत चोंच से उसे काटती है.
उसके काटने के बाद,
खोल में मौजूद जानवर
हिल नहीं सकता.





वह जानवर को खाना शुरू कर देती है.

लेकिन ऑक्टोपस यहाँ सुरक्षित नहीं है.

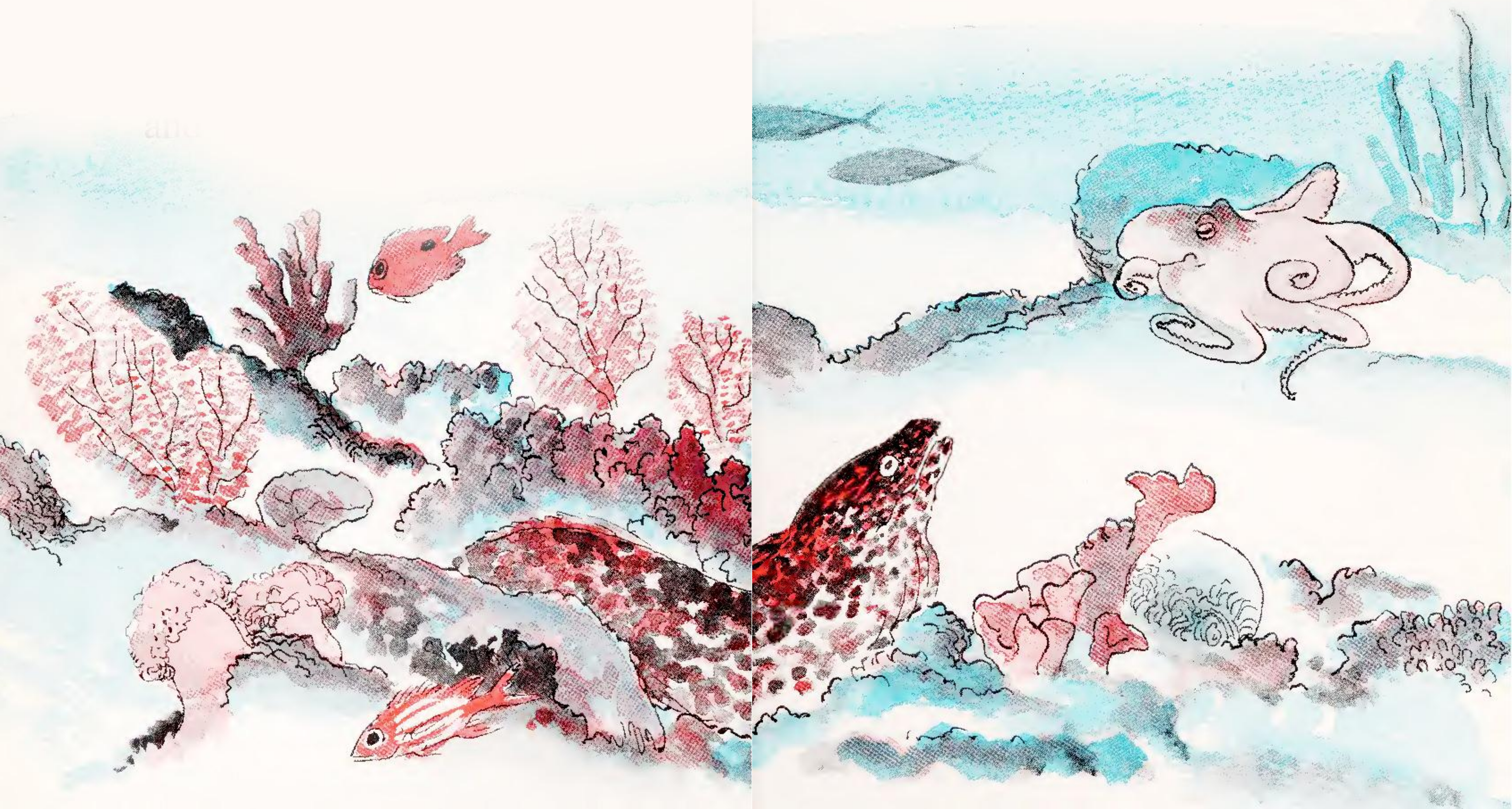
एक ईल छेद से अपना सिर बाहर निकालती है.

ईल, ऑक्टोपस की गंध सूंघती है

और उसकी ओर तैरती है.

वह ऑक्टोपस को खाना चाहती है.

अचानक ऑक्टोपस ईल को देखती है.





वह अपना खाना गिरा देती है.

उसका शरीर काला पड़ जाता है.

वह अपने शरीर से काली स्याही का

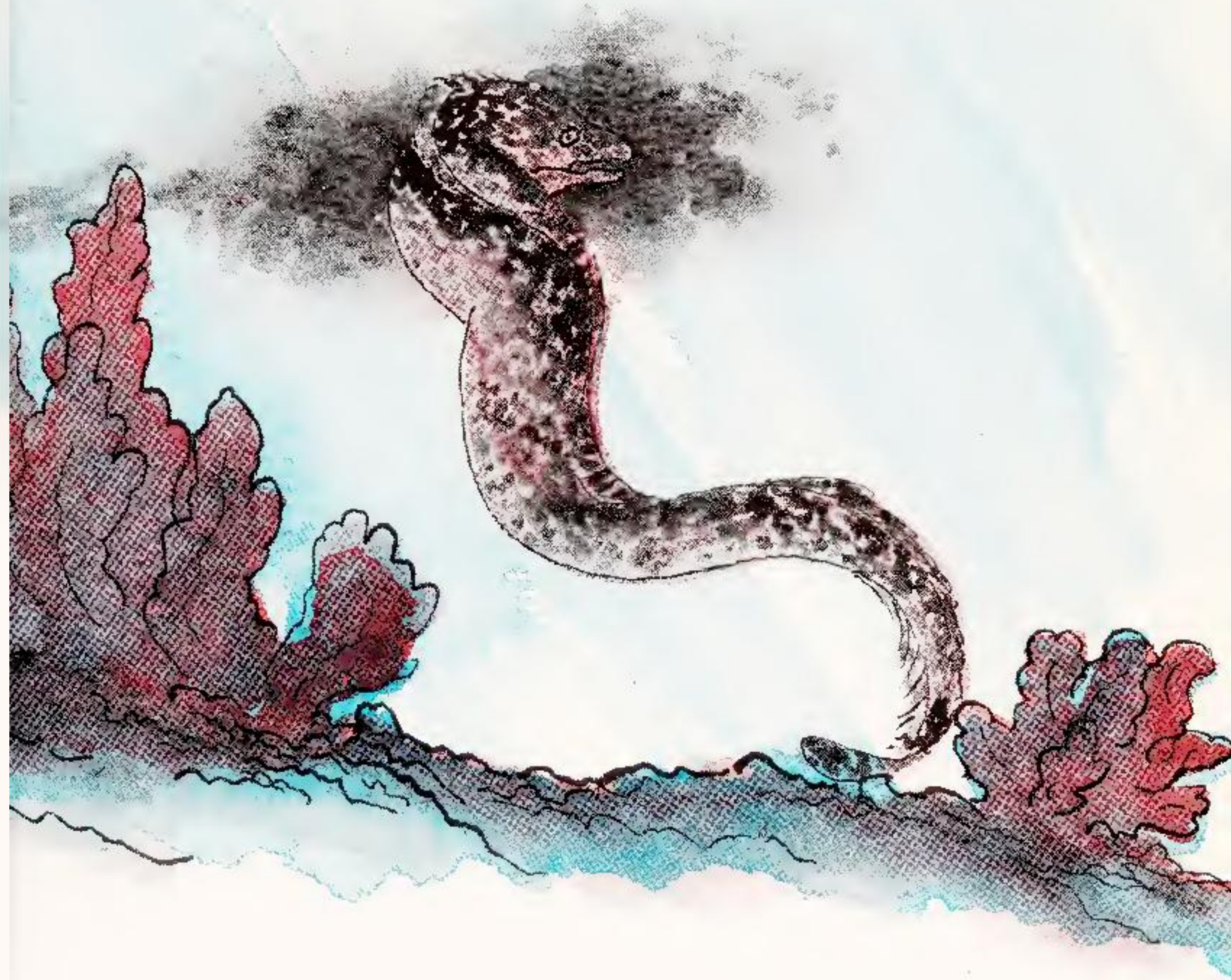
एक बादल छोड़ती है.

स्याही, पानी को काला कर देती है.

ईल स्याही में तैरती है.

इसलिए वो ऑक्टोपस को नहीं देख पाती.

ऑक्टोपस भाग जाती है.



वह अपने शरीर से पानी की धारें छोड़ती है.

वह समुद्र में तेज़ी से आगे बढ़ती है.

जब ऑक्टोपस सुरक्षित हो जाती है
तो उसकी गति धीमी हो जाती है.
वह पैराशूट की तरह अपनी बाहें खोलती है.
और कुछ चट्टानों पर फिसलती है.





वहाँ चट्टानों में उसे एक छेद मिलता है.

वह उस छेद में अपनी तीन बाहें डालती है.

वो छेद खाली है.

वह छेद के अंदर जाती है.

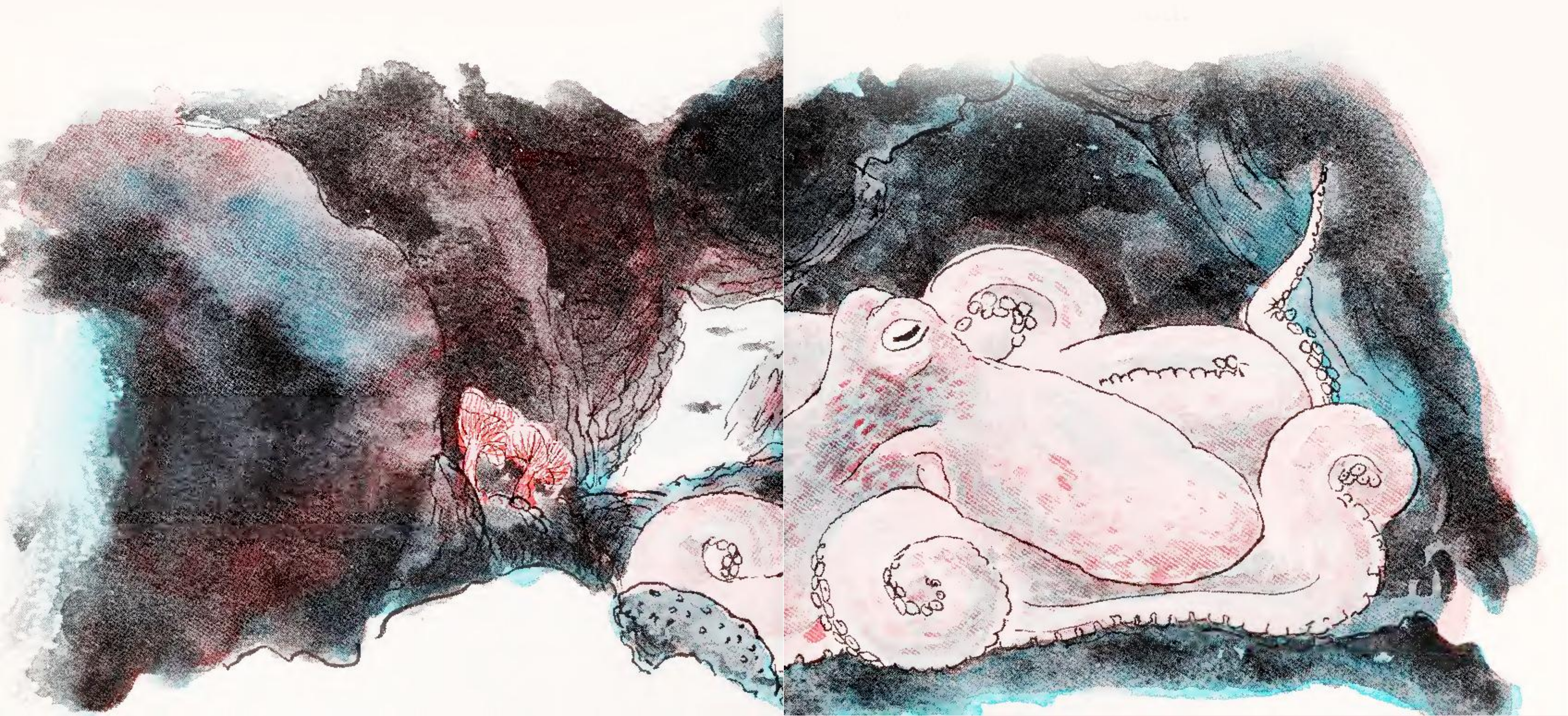
अंदर वो उसके हर हिस्से को छूती है.

वो छेद सही आकार का है.

उसे एक नया घर मिल गया है.

ऑक्टोपस वहाँ आराम करती है,

और समुद्र को देखती है.

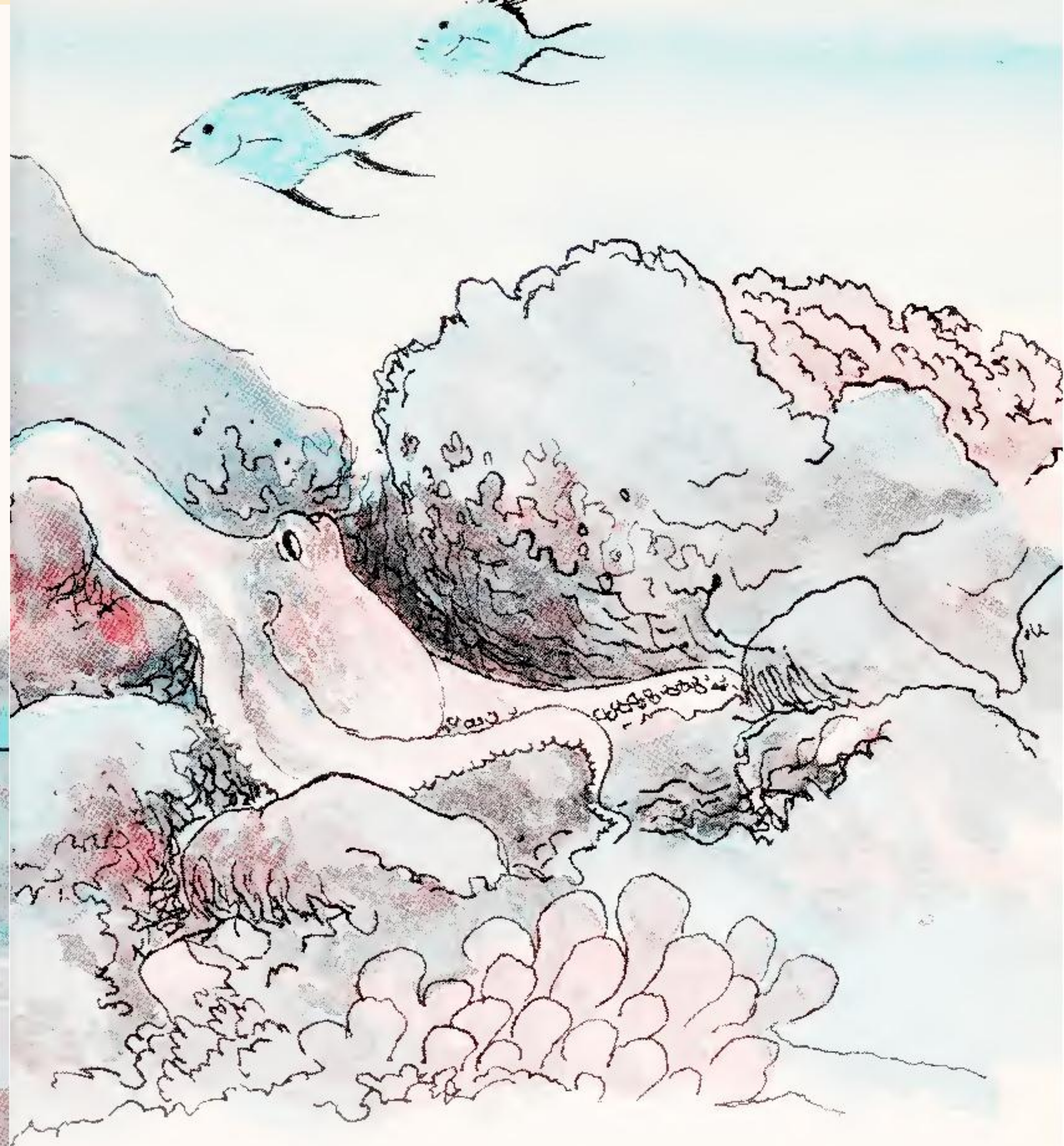


एक केकड़ा चट्टानों की ओर चलता है,

वह बग़ल ही में चल रहा होता है.

ऑक्टोपस केकड़े को देखती है.





केकड़ा एक मरी हुई मछली पाता है

और उसे खाना शुरू कर देता है.

ऑक्टोपस अपने घर से बाहर आती है.



वह केकड़े पर झपटती है.

उसका शरीर काला पड़ जाता है.

उसकी बाहें खुली छतरी

की तरह फैल जाती हैं.

वो बाँहों पर लगे चूसकों से

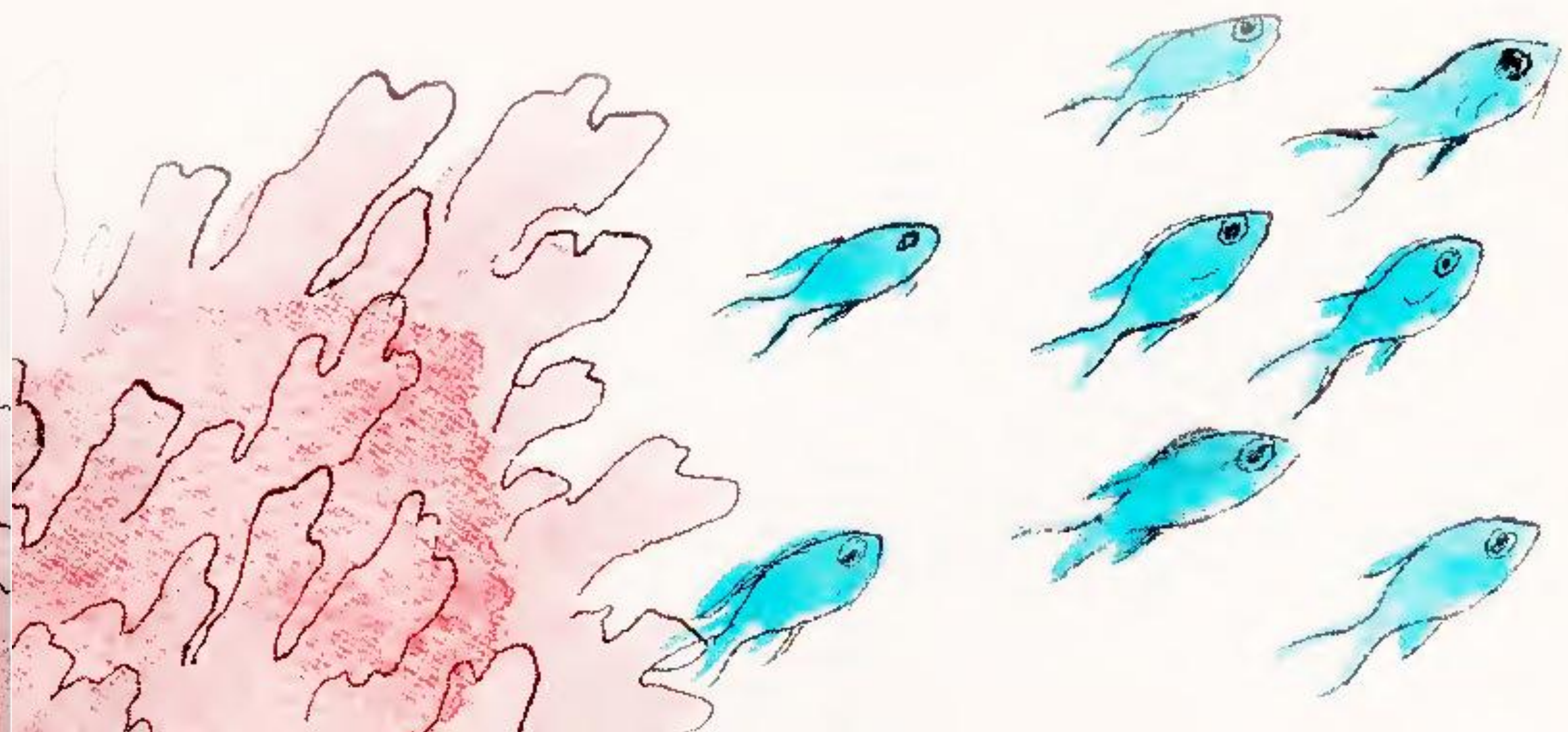
केकड़े को कसकर पकड़ लेते हैं.

वह केकड़े को काटती है.

वह हिल नहीं पाता है.

फिर ऑक्टोपस, केकड़े को

अपने घर में खींचती है.



वह अपनी चोंच से

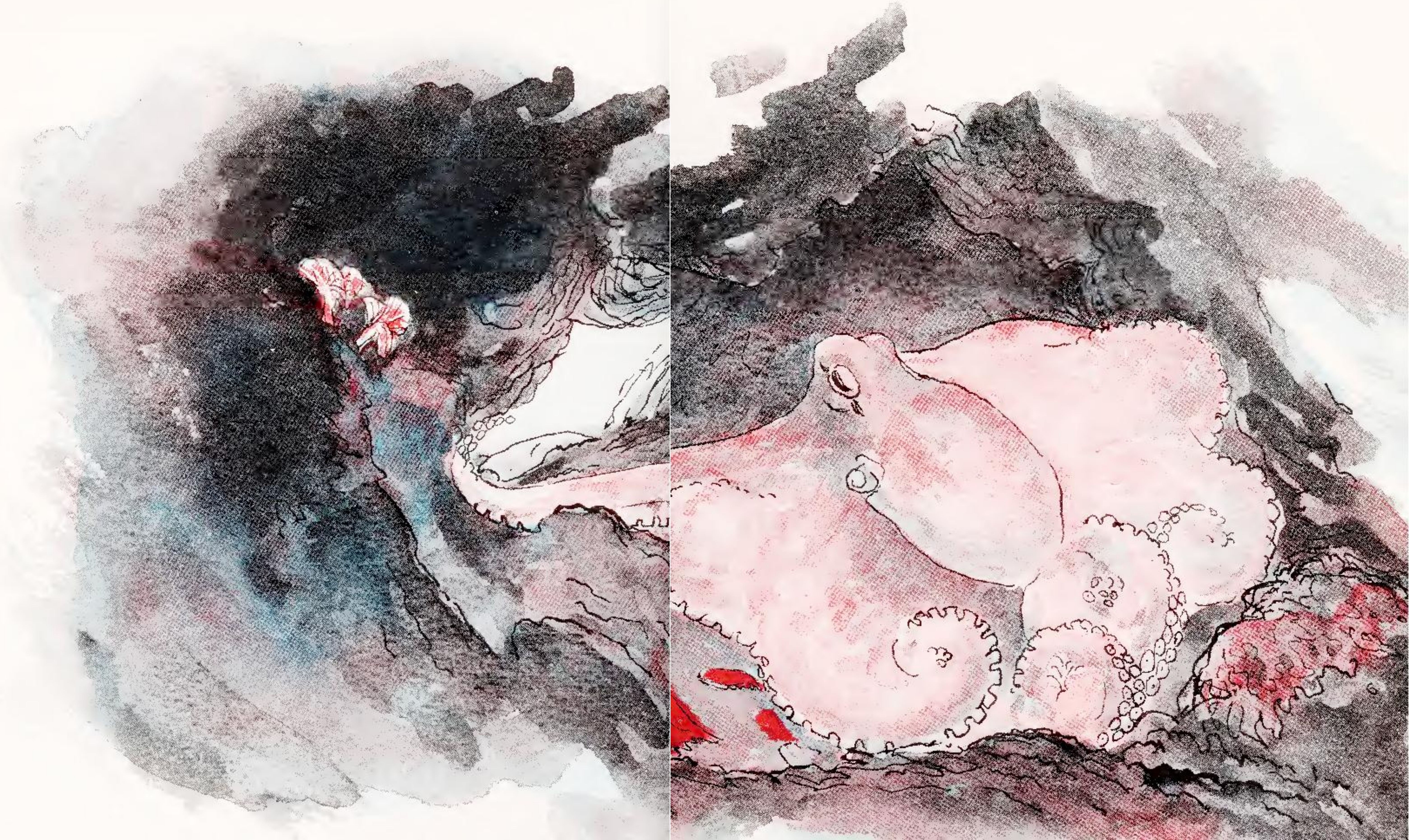
केकड़े के खोल को तोड़ती है.

फिर वह मांस को चूसती है.

खाना खत्म करने के बाद,

वह खोल के टुकड़ों को

बाहर धकेल देती है.



ऑक्टोपस ने कई महीने पहले

एक नर ऑक्टोपस के साथ

संभोग किया था.

अब वसंत आ गया है.



ऑक्टोपस के अंडे देने का समय

लगभग आ गया है.

वह तैयारी करने लगती है.

ऑक्टोपस अपने घर के बाहर

दो हाथ रखती है.

वहां उसे कुछ छोटे पत्थर मिलते हैं.

ऑक्टोपस अपने हाथों पर लगे

चूसकों से पत्थरों को पकड़ती है.

वह पत्थरों को अपने घर में खींचती है.

वह उन्हें छेद के चारों ओर रखती है.

वह छेद को छोटा बनाती है.

जिससे बड़े जानवर अंदर नहीं आ सकें.

फिर वह अपने अंडे देती है.

वह सैकड़ों अंडे देती है.

ऑक्टोपस अंडों को

अपने घर के अंदर चट्टानों पर रखती है.

वह अब भोजन की तलाश में

बाहर नहीं जाती है.







वह अपने अंडों की रखवाली करती है.

वह छोटी मछलियों

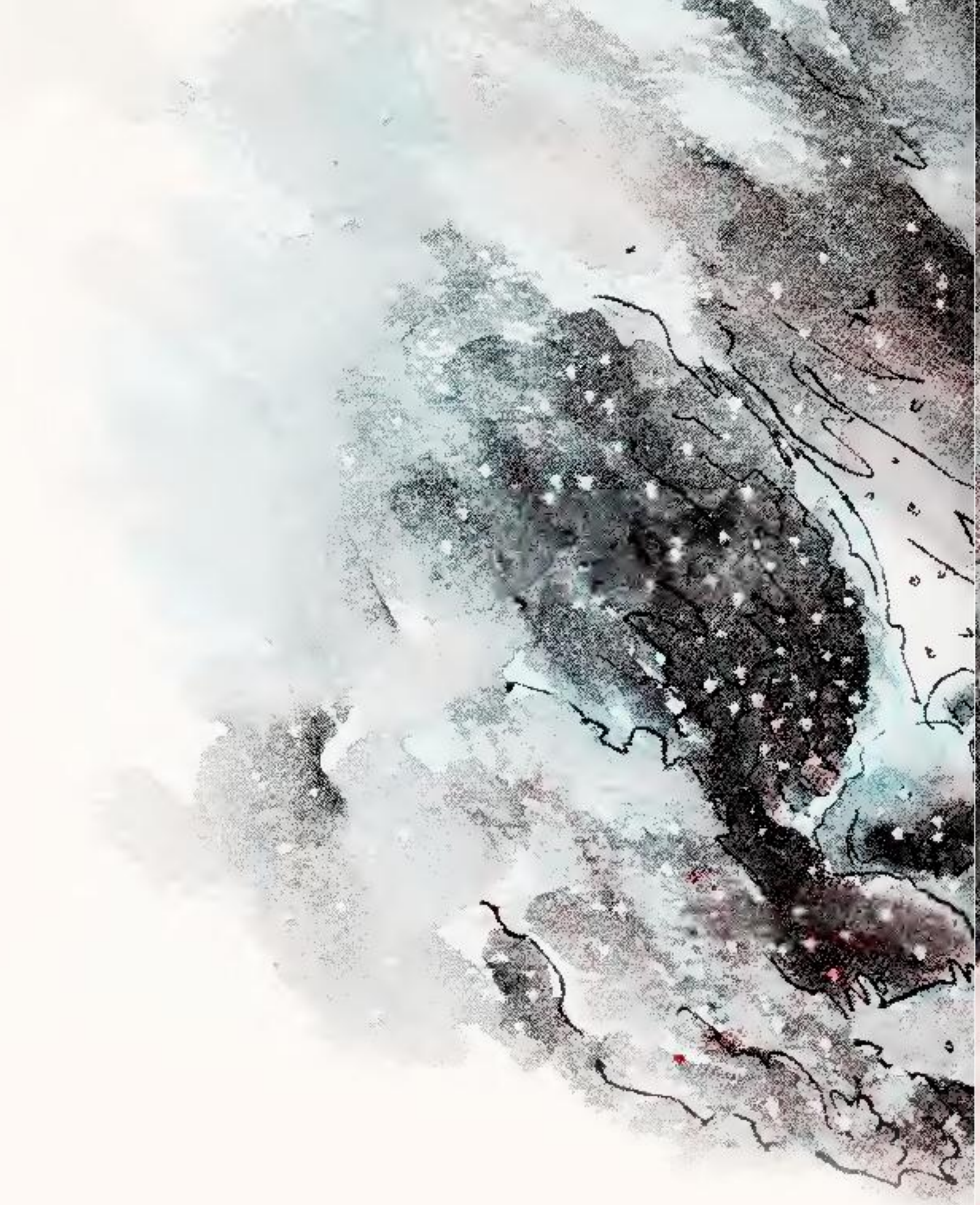
और झींगों को अपने अंडे खाने से रोकती है.

वह अंडों को साफ रखने के लिए

उन पर अपनी बाहें रगड़ती है.

हफ़्तों तक वह

अपने घर से बाहर नहीं निकलती हैं.



आखिरकार अंडे फूटते हैं.

ऑक्टोपस के

सैकड़ों बच्चे होते हैं.

बच्चों पर

पीले और लाल रंग के धब्बे होते हैं.

वे छोटे जोकर जैसे दिखते हैं.

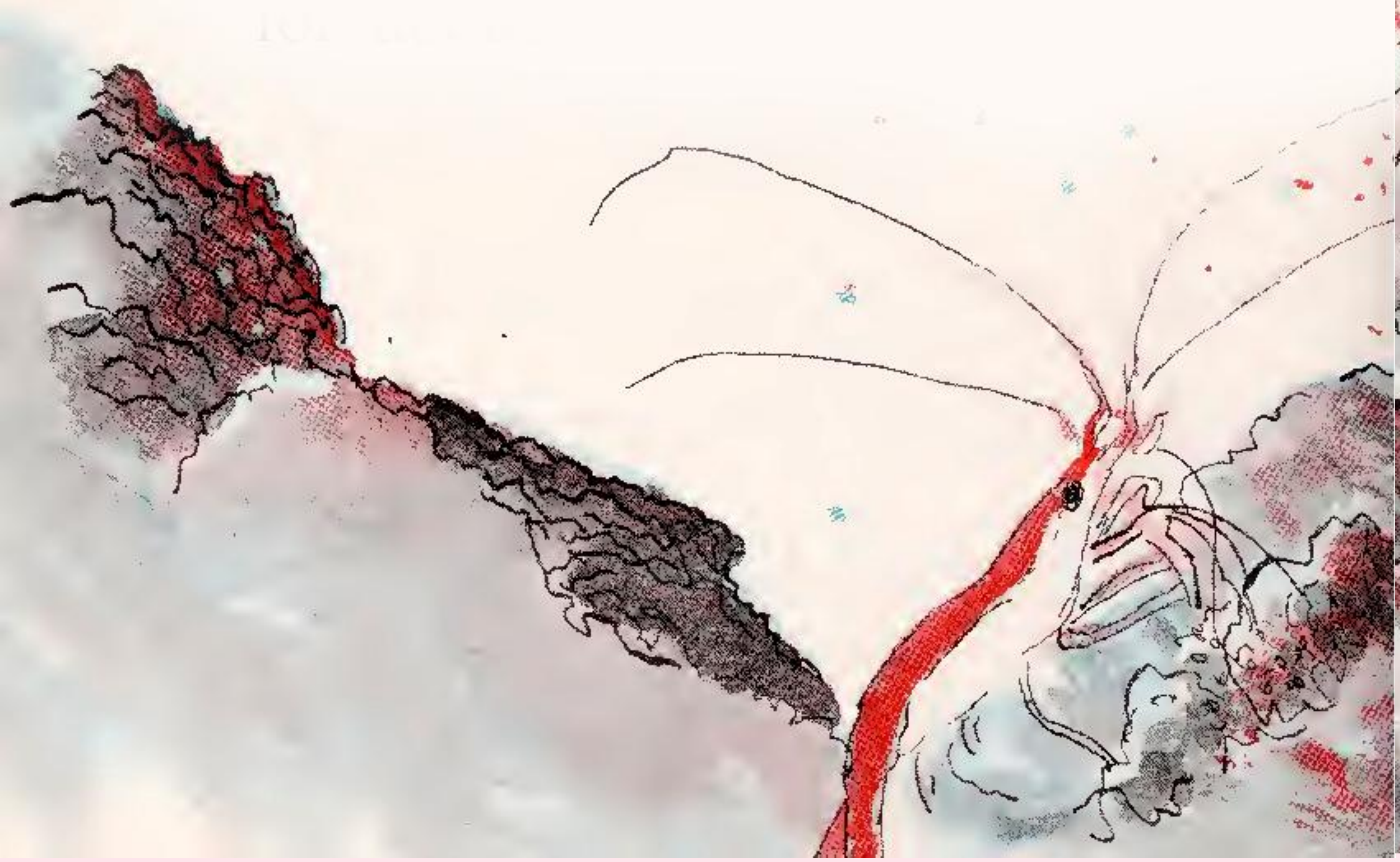


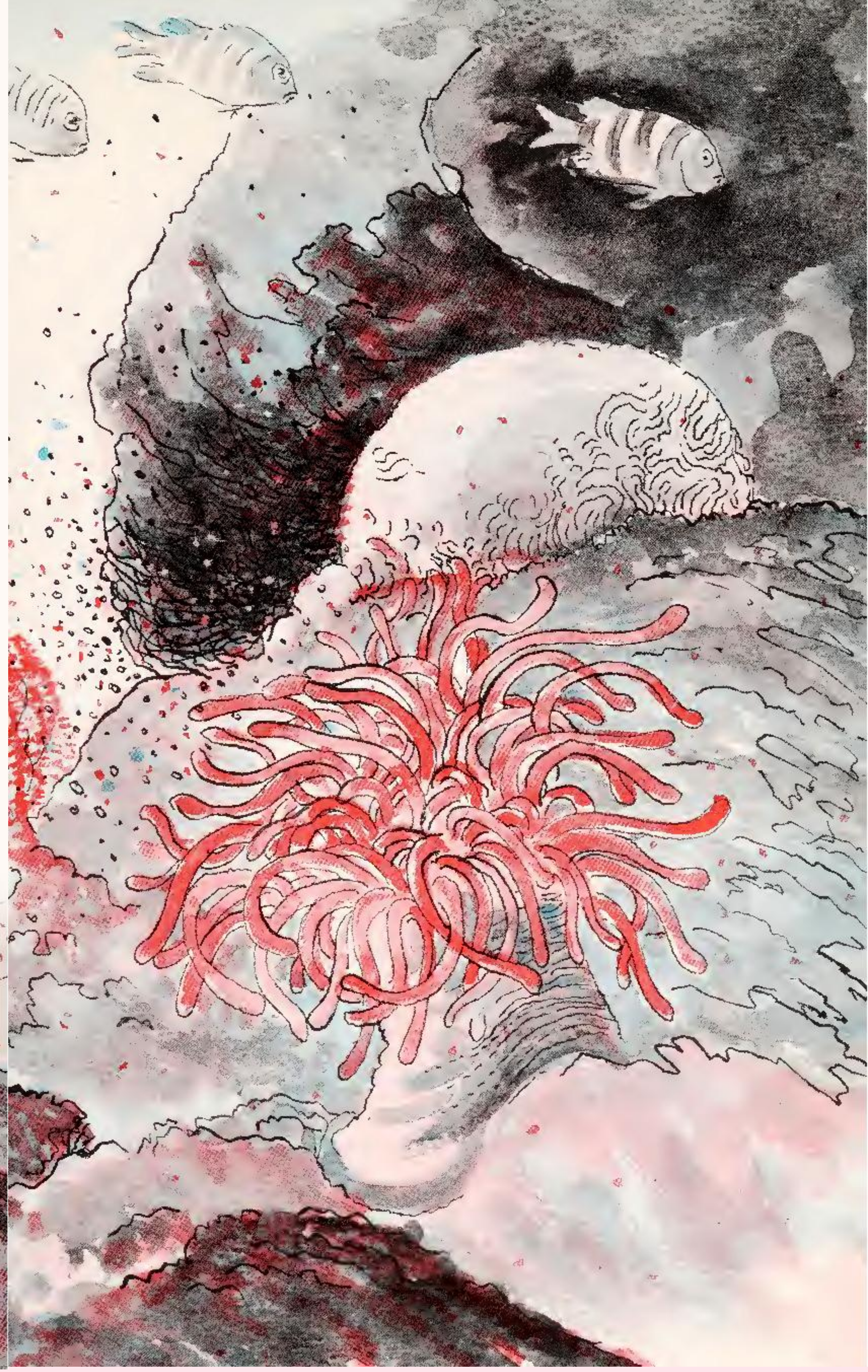
वे पिस्सू से बड़े नहीं होते.

उनके हाथ लंबे नहीं होते.

वे बहुत अच्छी तरह तैर नहीं सकते हैं.

लेकिन अब बच्चों के
घर छोड़ने का समय आ गया है.
उनकी माँ पीछे रह जाती है.
वह बहुत दुबली हो गई है
क्योंकि उसने कुछ नहीं खाया है.
वह ज़्यादा दिन तक जीवित नहीं रहेगी.
बच्चे समुद्र में चले जाते हैं.
वे लगभग दो महीने तक
पानी में तैरते रहते हैं.







छोटे ऑक्टोपस

छोटे समुद्री जानवरों को खाते हैं.

कुछ छोटे ऑक्टोपस को

मछलियाँ खा जाती हैं.

जो बच जाते हैं

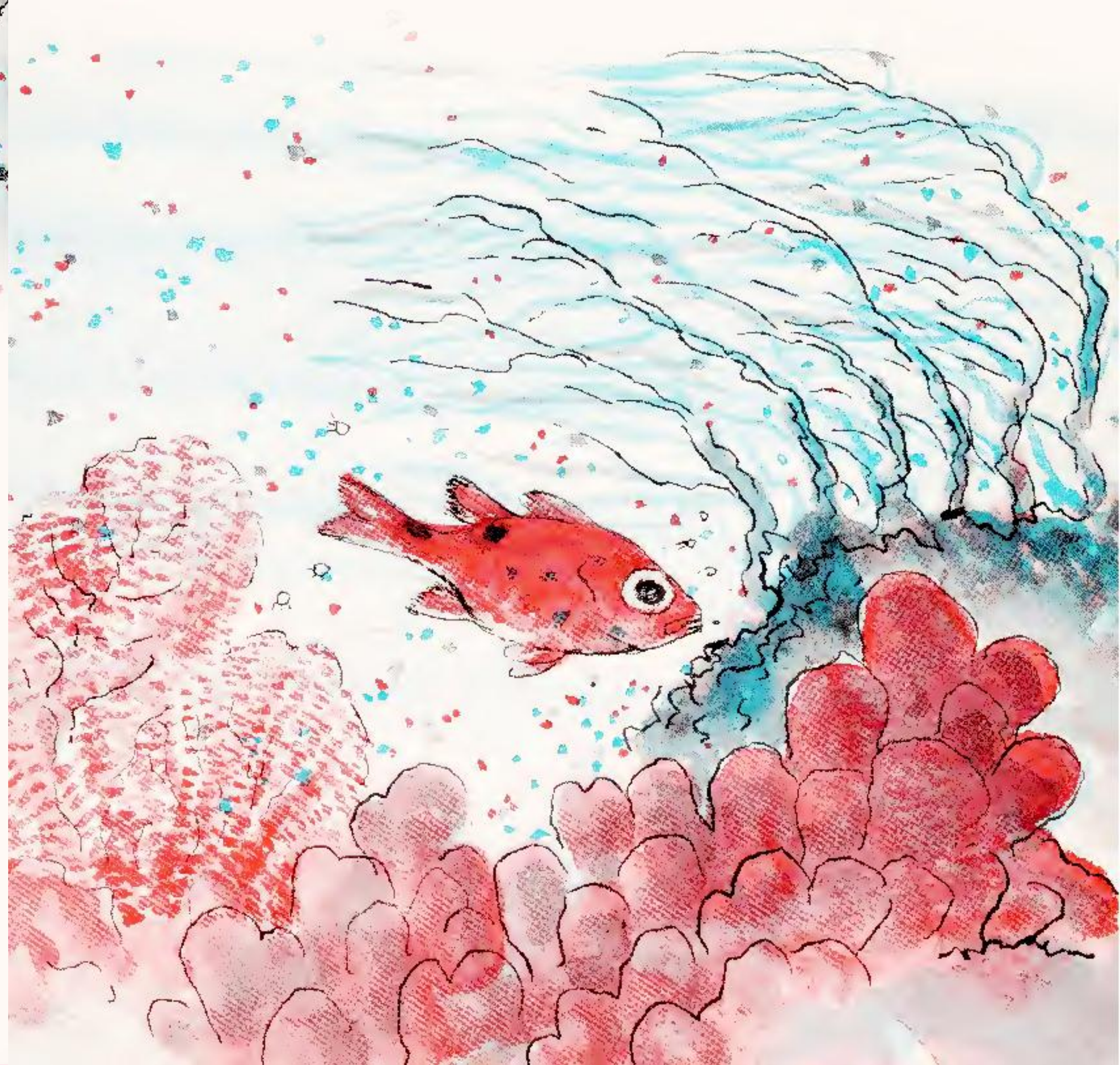
वे बड़े हो जाते हैं.

उनकी भुजाएँ लंबी हो जाती हैं.

वे अपनी भुजाओं पर चल

या फिसल सकते हैं.

वे अच्छी तरह से तैर सकते हैं.



अब छोटे ऑक्टोपस खाने के लिए
केकड़ों की तलाश
शुरू करने के लिए तैयार हैं.
वे अपनी भुजाओं पर लगे
चूसकों से छू और चख सकते हैं.
वे चट्टानों और खरपतवारों
के रंग का बनकर छिप सकते हैं.
वे स्याही के काले बादल उड़ाकर
दुश्मनों से बच सकते हैं.





वे घर खोजने के लिए तैयार हैं.

दो युवा ऑक्टोपस कुछ चट्टानों के पास आते हैं.

वे चट्टानों पर अपनी बाहें चलाते हैं.

प्रत्येक को चट्टानों में अपने छेद मिल जाते हैं.



प्रत्येक को एक जगह मिल जाती है

जहाँ वह छिप सकते हैं,

आराम कर सकते हैं और खा सकते हैं.

उन्हें समुद्र में घर मिल गए हैं.

लेखक के बारे में

डॉ. एवलिन शॉ न्यूयॉर्क शहर में अमेरिकन म्यूज़ियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री में पशु व्यवहार विभाग में क्यूरेटर हैं. डॉ. शॉ ने सोलह वर्षों तक मछलियों के व्यवहार का अध्ययन किया है. उन्होंने कैरिबियन और भूमध्य सागर में कई प्रकार के ऑक्टोपस देखे हैं.

अंत